वैयक्तिक एवं वैश्लेषिक कृतित्व के धनी आचार्य हेमचन्द्र एक ऐतिहासिक विश्लेषण

डॉ० हरेन्द्र कुमार,
(सहायक प्रोफेसर), ए.बी. यादव कॉलेज,
बोधगया, बिहार (इंडिया) 824231।

सारांश–

आचार्य हेमचन्द्र नाम भारतीय चिन्तन साहित्य और साधना के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे आचार्य ही नहीं थे वे केवल महान गुरु और समाज सुधारक भी थे। वे मनीषी अद्‌भुत प्रतिभा एवं सर्जन क्षमता से सम्पन्न थे। कुमारपाल के धर्म गुरु भी थे। बारहवीं शताब्दी के महान् आचार्य के रुप में हम उन्हें देख सकते हैं। उन्होंने गुजरात के इतिहस को अधिक प्रभावित किया। जैन धर्म का एक नया मोड़ दिया। गुर्जर भूमि को अहिंसा मय बना दिया। नवीन साहित्य की सृष्टि कर इस दिशा में भी एक नये पथ को आलोकित किया। जैन आचार्य और ग्रन्थकारों में व मूर्धन्य है। उनका प्राकृत और संस्कृत पर सामान्य अधिकार थे। उन्हें कलिकाल सवर्ज्ञ के नाम से पुकारते थे। काव्यानुशासन उच्च कोटि के काव्याशास्त्रकारों की श्रेणी में प्रतिष्ठित किया है। साहित्य में आचार्य के सम्राट् की उपाधि के सर्वथा योग्य हैं। आचार्य हेमचंद्र महान आचार्य में एक थे।

i प्रस्तावना–

भारतीय चिन्तन साहित्य और साधना के क्षेत्र में अत्यंत आचार्य हेमचन्द्र का महत्वपूर्ण स्थान है। वे महान् आचार्य कवि वैयाकरण गुरु एवं बहुभाषाविद् थे। वे अद्‌भुत प्रतिभा एवं सृजन क्षमता से सम्पन्न मनीषी थे। जैन धर्म का नया मोड़ दिया और गुजरात के इतिहस को प्रभावित किया। गुजरात के समस्त भूमि को अहिंसामय बना दिया। साहित्य, दर्शन, योग, व्याकरण, धन्यशास्त्र, काव्यशास्त्र, अभिधनकोष ादि साहित्य के सभी महत्वपूर्ण अंगों पर नवीन साहित्य की सृष्टिकार इस दिशा में एक नएक क्षितिज को उद्‌घाटित किया जैन आचार्यों और ग्रन्थकारों में मूर्धन्य है। इसलिए उन्हें लोग कलिकाल सर्वज्ञ के नाम से पुकारते थे।

ii विश्लेषणात्मक अध्ययन–

कालिकल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र को पाश्चात्य विद्वान सम्मानपूर्वक ज्ञान का सागर मानते हैं तथा संस्कृत की दुनिया में भी उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। आचार्य हेमचन्द्र का व्यक्तित्व प्रेरक भी है। गौरवपूर्ण भी है। कलिकाल सर्वज्ञ उपाधि से उनके विशाल एवं व्यापक व्यक्तित्व के संबंध में अनुमान लगाया जा सकता है। उनकी प्रतिभा का प्रकाश सामान्य रूप से न केवल आध्यात्म एवं धर्म के क्षेत्र में है। हर्ष के दरबार में जो स्थान बाणभट्ट का था वही स्थन संस्कृत साहित्य और विक्रमादित्य के इतिहास में कालीदास का है। आचार्य हेमचन्द्र चमत्कारी पुरूष थे। वे योगसिद्ध पुरूष के रूप में जाना जाता है। उन्हें देवियाँ भी सिद्ध थी। वे स्वयं हेमचन्द्रचार्य चमत्कार सिद्ध व्यक्ति थे। फिर भी लोगों के चमत्कार के जाल में मोहित नहीं करते थे। उन्होंने अपने आश्रयदाता कुमारपाल की बीमारी

अपनी मंत्र शक्ति से दूर की थी। आचार्य हेमचन्द्र अपने भव्य व्यक्तित्व के रूप में एक जीवित विश्वविद्यालय अथवा मूर्तिमान ज्ञानकोष थे। उन्होंने जयसिंह और कुमारपाल की सहायता से मद्यनिषेध सवाल किया था। उन्होंने कलिकाल सर्वज्ञता देख सकते थे। आचार्य हेमचन्द्र की प्रेरणा से ही हुआ था। उनके प्रभाव एवं प्रेरणा से गुजरात तथा राजस्थान में बने मंदिर एवं विहार कला के उत्कृष्ट नमूने बन पड़े है। आचार्य हेमचन्द्र के व्याकरण की पहली विशेषता यह है कि उन्होंने व्याकरण से सम्बद्ध सभी अंगों का प्रवचन खुद ही किया है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण की वृहदकृति में कतिपय शिक्षा सूत्रों को भी उद्धृत किया है। आचार्य हेमचन्द्र ने विश्राम या विराम नहीं किया। पंडित चन्द्रधार शर्मा गुलेरी ने हेमचन्द्र के ग्रंथें के महत्व की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। हेमचन्द्र आगे–पीदे नहीं देखा बढ़ता चला गया। आचार्य हेमचन्द्र की दोहें हमें अधिक प्रभवित करती है। अपभ्रंश व्याकरण आचार्य हेमचन्द्र के साहित्य का महत्वपूर्ण देन है। हेमचन्द्र की भाषा पर प्राकृत अपभ्रंश एवं अन्य देशी भाषाओं का पूर्णतः प्रभाव परिलक्षित होता है। संस्कृत कथा साहित्य में आचार्य हेमचन्द्र का महत्व स्पष्ट है। प्राकृत जैन कथा साहित्य जैन मनीषियों की एक अनुपम देन है। आचार्य हेमचन्द्र की धार्मिक पुस्तकों में ज्ञान और भकिट में कवियों मानते हुए भी अपृथकत्व का निर्वाह हुआ है। आचार्य हेमचन्द्र की पुस्तकों में चरित्र एवं भक्ति का उत्कृष्ट समन्वय पाया जाता है। आचार्य हेमचन्द्र किसी भी एकान्तिक पक्ष को एवं अत्यानन्तिक अनशन त्याग के विरोधी थे। आचार्य हेमचन्द्र आत्मा को नित्यानित्य मानते हैं। आचार्य हेमचन्द्र सम–भावना का सिद्धि साहित्य में ही प्रतिपादन करके संतुष्ट नहीं हुए उन्होंने समन्वय भावना को अपने दैनिक आचरण में भी उतारने का काम किया उतमोत्म गुणों के आचार्य हेमचन्द्र प्रतिभाशाली धारक थे। प्रतिदिन सौ शिष्यों के परिवार उन्हें घेरे रहते थे। आचार्य हेमचन्द्र का साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र के बाद के संस्कृत लेखकों पर प्रभाव दृष्टिगेचर होता है। आचार्य हेमचन्द्र की पुस्तक निश्चय ही संस्कृत साहित्य के अलंकार है। हेमचन्द्र लक्षण साहित्य तर्क व्याकरण एवं दर्शन के विशिष्ट आचार्य हैं। हेमचन्द्र की विद्वता उनकी जन्मजात सम्पत्ति है। जैन साहित्य के क्षेत्र में उनका स्थान ऊँचा है। उच्च कोटि के विद्वान में आचार्य की गणना किया जाता है। गुजरात की भूमि की अहिंसामय बना दिया था। आचार्य हेमचन्द्र सिर्फ शास्त्रों की रचयिता ही नहीं थे बल्कि सुन्दर काव्य के निर्माता भी थे। साहित्य सम्राट् की उपाधि योग्य आचार्य हेमचन्द्र थे। आचार्य हेमचन्द्र का ग्रंथ भंडार एक विशाल ज्ञानकोश है। आचार्य हेमचन्द्र एक असामान्य संग्रहकर्त्ता थे। उद्धरण प्राप्त होते हैं। आचार्य हेमचन्द्र वास्तव में अनुपमेय है कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र जैसे ज्ञान के अगाध समुद्र (सागर) का पार पाना अत्यंत कठिन है।

iii निष्कर्ष

आचार्य हेमचन्द्र के राज कुमारपाल के गुरू बनाने से पूर्व गुजरात के नरेशों ने उपाधि जैन धर्मी की दीक्षा नहीं ली थी फिर भी वे इसके प्रति उदार दृष्टि रखते थे। कुमारपाल आचार्य हेमचन्द्र से प्रभावित होकर जैन धर्म की दीक्षा लिया था। समाज में शिक्षा लेने के बाद कुमारपाल एक क्रांतिकारी रूप ला दिया। आचार्य हेमचन्द्र कालिन सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन किया जाना सर्वथा प्रासंगिक एवं औचित्य पूर्ण प्रतीत होता है। आचार्य हेमचन्द्र के कारण गुजरात में अधिक

लोकप्रिय जैन धर्म हुआ। आचार्य हेमचन्द्र के महान व्यक्तित्व के समक्ष कुमारपाल को नतमस्तक होकर दीक्षित ही हो गया। आचार्य हेमचन्द्र तत्कालीन गुजरात के प्रतिष्ठित धर्म गुरु हो गये। इस प्रकार हेमचन्द्र के युग में धर्म की भूमिका गुजरात के समाज पर पूर्णरूपेण थी। अहिंसा मूर्ति महात्मा गांधी के जन्म देने की अद्वितीय गौरव गुजरात को ही प्राप्त है। हेमचन्द्र आदर्श मार्ग पर ही हमेशा चला करते थे और गुजरात में जैन धर्म का नया मोड़ दिया। गुजरात आचार्य हेमचन्द्र से अधिक प्रभावित हुआ।

iv संदर्भ

1. आचार्य डॉ० वि० भा० मुसलगाँवकर पृ० 170
2. शतार्थकाव्य–सोमप्रसूरि
3. आचार्य हेमचन्द्र डॉ० वि० भा० मुसलगाँवकर पृ० 171
4. प्रबंध चिंतामणि हेम प्रबंध पृ० 95
5. अष्टाध्यायी पाणिनी
6 पुरानी हिन्दी पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी 129
7. आचार्य हेमचन्द्र डा० वि० भा० मुसलगाँवकर– पृ० 185, 186, 187, 188
8. श्री मद्भावगत गीता, 6–17, 7–11 आदि
9. द्वयाश्रय काव्य हेमचन्द्र 1/79 तथा 5/133
10. त्रिषठिशलाक पर्व 1 सग 3 श्लोक 239 से 242 तक
11. हेमसमीक्षा मधुसुदन मोदी प्रकाशन
12. कुमारपाल चरित्र– हेमचन्द्र
13. ए० बी० कीथ
14. भागवत शरण उपाध्याय विश्व साहित्य की रूप रेखा
15. आचार्य हेमचन्द्र डा० वि० भा० मुसलगाँवकर पृ० 195